भगवत् कृपा

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष–15, अंक–5 मंगलवार, 26 मई '92	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी मई, 1992	वार्षिक चन्दा–10.00 प्रति अंक : 1.00

अमृतसेतु

[हम सब के प्यारे प्रभु प.पू. काकाजी का अमृत महोत्सव (75वीं जन्म जयंती) का महामंगलकारी वर्ष–'1993' आ रहा है.... सर्व गुणातीत स्वरूपों की छत्र-छाया में दिल्ली में 3rd Feb. के दिन-वह अमृतपर्व मंदिर में मूर्तिप्रतिष्ठा के साथ-साथ मनायेंगे। हमारे भाग्य का तो पार नहीं कि रोम-रोम में भगवान प्रकटाये परम पवित्र पुरूष गरजू बनकर हमारे जीवन में आ गये....हमें अपनी गोद दी और उनके संग जीवन जीये !!...कैसे ऋण चुका भी पायेंगे इनका?

पू. काकाजी के निम्नलिखित दो आंशिक पत्रों से ही स्पष्ट होता है कि हमें कैसी भव्य प्राप्ति हुई है....और इनके संबंध में आने के बाद हमें क्या करना है? और इससे भी अधिक–कैसी कल्पना से परे की प्रीति होगी। हम सबसे उनकी? कितना अपना माना होगा हमें–जो ऐसा सचोट व स्पष्ट मार्गदर्शन हमारे लिए खुला रख दिया कि आज भी यदि करने लग जायें तो परम सुखी हो जायें व देह रहते हुए अक्षरधाम का सुख-शांति आनंद प्राप्त करें.....

आईये, हम सब मिलकर इस रहस्य का मनन चिंतन करके समझने का प्रयास करें। इन वाक्यों को अपने जीवन का आधार बना लें ताकि 'अमृत महोत्सव' तक में प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों हमारी सब कसर टाल कर हमारी साधना की पूर्णाहुति करा देवें....यही अंतर की आरजु.....]

❑ .....मुझे तो
पू. बापा ने अनुपम ही पसंदगी में चुना था,
सो,
सर्वांगी विकास में और सर्वोच्च ब्रह्मीस्थिति में
तकलीफें बाधारूप नहीं बनी
और
मूल रहस्यों गौण नहीं हुए–
अक्षरपुरुषोत्तम उपासना
व
जीव को ब्रह्मरूप करके परब्रह्म में जोड़ने के मूल उद्देश्य में सहज स्थिति व सिद्धि पू. बापा ने दे दी.....
जिससे
सभी भूमिकाओं में अखंड शांति और आनंद रहा....

❑ ❑ ❑

❑ गुरु बहुत होते हैं,
परन्तु
सद्गुरु कम।
और
सच्चा सद्गुरु तो शायद ही मिले
और
मिल भी जाये तो–
उसके जोग में रहना कठिन।
यदि रहें भी, तो–
अखंड दिव्यभाव रखना कठिन।
वह भी रखें तो–
स्वभाव टाल कर टिकना कठिन।
वह भी कर लें तो–
उसकी अनुवृत्ति में रहना कठिन।
वह भी हो जाये, तो–
उसके अभिप्राय की भक्ति करनी कठिन।
और
वह भी हो, पर–
भिन्न-भिन्न प्रकार के–भिन्न रुचि वाले मुक्तों के साथ
दिव्यभाव ही रखकर–साधुता रखकर
सरलता वर्तना–सर्वोत्तम स्थिति है।
और तब–
पूर्णता ही प्रगटे
और
Final stage सिद्ध हुई मानी जाये।
तो,
यह **एकता व समता** दृढ़ करते जाना।
दूसरा क्या कर रहा है?
वह
जरा भी नज़र में नहीं लेना।
हमें
प्रभु को याद करके
उन्हें ही सब करने देना है।

–प.पू. काकाजी महाराज
शिकागो, 12-5-’-77

'योगी शताब्दी'...... एक अनमोल संस्मरण

पिछले चार वर्ष गुरुहरि योगीजी महाराज के शताब्दी महोत्सव का जो रणकार चारों ओर गूँज रहा था, वह महोत्सव खूब भव्यता से अविस्मरणीय यादगार के रूप में सर्व गुणातीत स्वरूपों, भिन्न-भिन्न स्थानों से पधारे पवित्र संतों की निश्रा में अपने गुणातीत समाज की देश-विदेश में फैली चारों पंखुडियों–संतों, युवकों, बहनों, गृहस्थों ने अत्यधिक परिश्रम करके खूब उमंग व उल्लास से मनाया..... स्थूल रूप से योगी शताब्दी महोत्सव भले पूर्ण हुआ हो, परन्तु गुरुहरि योगीजी महाराज के जीवन के सिद्धान्तों-अजोड़ सेवा, अद्भुत सरलता, अगाध वात्सल्य आदि की ओर सतत निगाह रखकर प्रत्यक्ष योगी स्वरूपों की अभिप्राय की भक्ति के अनुसार जीवन की आखिरी सांस तक जीकर 'योगी' को प्रगटाकर अपनी 'शाश्वत् योगी शताब्दी' तो हमें मनाते रहना ही है....

गुणातीत इतिहास में योगी शताब्दी महोत्सव अत्यंत विशाल पैमाने पर मनाया गया....थोड़े शब्दों में यदि कहा जाये तो.....अद्भुत, अलौकिक, अद्वितीय, अनुपम....खूब व्यवस्थित योजना, संतों, सेवकों की, गुरु के वचन पर न्यौछावर होकर तन, मन, धन से मर मिटने की अदा, निराली सुरुचि का यह अनोखा दर्शन था। महोत्सव की कोई भी चीज ऐसी नहीं थी, जिसे देखकर मुँह से धन्यवाद-धन्यवाद न निकल पड़े। चाहे वह गुरुहरि योगीजी महाराज के जीवन की प्रदर्शनी हो, चाहे स्टेज की कलात्मक साज-सज्जा हो, चाहे खान-पान की व्यवस्था हो, चाहे हरिभक्तों को बिठाने, उनके ठहरने करने की व्यवस्था ही क्यों न हो। प्रत्येक विभाग की व्यवस्था को देखने से संतों, सेवकों के दिल की नितरती गुरु-भक्ति, रात-दिन देखे बिना शरीर को घिस देने की, योगी शताब्दी के लिए क्या नहीं हो पाये–ऐसी ही भावना का दर्शन होता था। सच ! आँखों में पानी आ जाता था...धन्य है उस गुरु को और उसके इशारे पर अपना कुछ भी प्रिय रखे बिना दौड़ने वाले संतों, सेवकों व समाज को....शब्द नहीं मिलते। गुरुहरि योगीजी महाराज ने भी अवश्य इस सेवा के फलस्वरूप हर एक पल अपनी 'हाश' लुटायी ही होगी....

योगी शताब्दी महोत्सव निमित्त वैसे सभी मुक्तों दर्शन, सेवा, समागम के लिए हरिधाम पहुँच गये थे। परन्तु फिर भी काफी मुक्त, हरिभक्तों संजोगों की कठिनाई के कारण नहीं पहुँच पाये। उस महोत्सव का हुबहु विवरण शब्दों द्वारा संभव तो नहीं....परन्तु वहाँ न पहुँच पाने वालों को इस महोत्सव की झाँकी मिल सके यूँ हमारी थोड़ी सेवा हो सके व हम अपने आपको भी इसी स्मृति में डुबायों रखें इसी मंगलकारी भावना हेतु 'भगवत्कृपा' द्वारा महोत्सव का वर्णन करने की अल्प कोशिश कर रहे हैं....इसे पढ़कर जाने-अनजाने यदि किसी के दिल से इतना ही निकले कि 'अहो हो ! कैसा, भव्य महोत्सव ! कितना परिश्रम ! धन्यवाद-धन्यवाद !' –बस इतनी भावना के फलस्वरूप भगवान स्वामिनारायण व प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों अंतसमय में उसे अक्षरधाम का अधिकारी बना देंगे....आईये, मानसी में स्थिर बैठकर, प्रसन्नचित्त से हम उस दिव्य महोत्सव का दर्शन व स्मृति करें व स्वयं को धन्य करें.....

बड़ौदा के नज़दीक के हरिधाम में लगभग 200 एकड़ भूमि में इस महोत्सव का आयोजन किया गया था। गर्मी की वजह से जगह-जगह Tents बाँधे गए थे। देश-विदेश से आये हजारों हरिभक्त खुले tents में ही रहे। डेढ़-दो लाख हरिभक्त एक

साथ बैठकर सत्संग सभा का लाभ ले सकें ऐसा 2000 के करीब नीम के वृक्षों द्वारा छाया देता हरी घास का सभामंडप खूब मेहनत से तैयार किया गया था। भूमि को समतल करके प्लास्टिक व बोरी के टाट बाँध-बाँधकर प्रसाद लेने की व्यवस्था की गई थी। बड़े-बड़े प्लास्टर आफ पेरिस के कलात्मक ढंग से बने भव्य योगी द्वार, आनंद द्वार एवं हंस द्वार (इंडिया गेट के समान) दूर से नजर आ रहे थे। जगह-जगह, थोड़ी-थोड़ी दूरी पर ठंडे पानी की टंकिया रखी गई थी। एक ओर आठ किलोमीटर के मैदान में गुरुहरि योगीजी महाराज के जीवन चरित्र का सजीव चित्रण करती भव्य प्रदर्शनी लगाई गई थी.....जिसमें बापा की शैशवलीला, दीक्षाविधि, गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज के प्रति की अप्रतिम गुरुभक्ति, दासत्व, अद्भुत सेवा, अजोड़ सहनशीलता, अतिदृढ़ स्वधर्मपालन, गरजु व गरीब भाव का दर्शन कराती सजीव चित्र प्रतिमायें थी..... गुरुहरि प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारी स्वामिजी, प.पू. महंतस्वामी के बापा के साथ के प्रसंगों का अनूठा दर्शन था। प.पू. अक्षरविहारी स्वामिजी के मार्गदर्शन में पू. प्रेमस्वामी, पू. विज्ञानस्वामी, पू. दासस्वामी, संतों व विद्यानगर के सेवकों ने अत्यधिक परिश्रम से जैसे अपना दिल निचोड़ दिया था। प्रदर्शनी देखते-देखते अहो !अहो! बस निकलता था और गुरुहरि योगीजी महाराज के प्रति अपना दिल-दिमाग अगाध श्रद्धा से नतमस्तक हो जाता था।

प्रदर्शनी से बाहर निकलते ही हिन्दु संस्कृति का दर्शन कराते प्लास्टर आफ पेरिस द्वारा निर्मित अपने सात आराध्य इष्टदेव व देवी-देवताओं के गगनचुंबी मंदिर तैयार किये गए थे। इसके लिये कलकत्ता, बंगाल और उड़ीसा से विशेष कारीगर बुलाये गए थे। एक मंदिर में गुरुहरि योगीजी महाराज की विशाल हँसती—**'भगवान सबका भला करे'—**आशीर्वाद देती मूर्ति का दर्शन बाहर के प्रवेश द्वार से ही हो रहा था। दूसरे मंदिर में अक्षरपुरुषोत्तम की युगल उपासना का दर्शन कराते स्वामी और नारायण विराजमान थे। तीसरे मंदिर में दो विशाल हाथियों के बीच झूले पर गुरु-शिष्य का अनुपम संबंध दिखाती गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज व गुरुहरि योगीजी महाराज की मूर्तियां थी। चौथे मंदिर में जैन संप्रदाय के तीर्थंकर भगवान महावीर की विशाल प्रतिमा थी। पाँचवें मंदिर में भगवान श्रीकृष्ण व राधाजी की मनमोहक मूर्ति, लक्ष्मीनारायणदेवजी व नरनारायणदेव की मूर्तियाँ थी। छठ्ठे मंदिर में भगवान शिवजी व पार्वतीजी थी तथा सातवें मंदिर में राम-सीता व हनुमानजी का दर्शन हो रहा था। सभी प्रतिमायें जीवंत दिखाई पड़ती थी—मानों कारीगरों ने अपनी कला से उनमें प्राण डाल दिए हों।

योगी शताब्दी का प्रोग्राम पाँच दिनों में बंटा था। 6 अप्रैल की पहले दिन विश्वशांति शतकुण्डी महायज्ञ किया गया, जिसमें संतों व हजारों हरिभक्तों ने विश्वबंधुत्व की भावना बढ़े और विश्वभर में शांति प्रसरे—ऐसी प्रार्थना की। 7 अप्रैल की सुबह 62 बहनों ने प्रभु के लिये समर्पित हो जाने की भावना से संसार त्याग कर बड़ी बहनों द्वारा भागवती दीक्षा ली। दूसरी ओर 32 युवकों ने प.पू. हरिप्रसाद स्वामिजी के वरद् हस्त साधु की भागवती दीक्षा ली। करीब 2500 हरिभक्तों ने गृहस्थाश्रम में रहते हुए एक संयमी जीवन बिताने का संकल्प करके अंबरीषदीक्षा ग्रहण की। उसी दिन शाम को महिला सम्मेलन था जिसमें बहनों के लिये भगवान भजने का रास्ता खोलने वाली साक्षात् पू. बा, पू. ज्योति बहन, पू. प्रेम बहन, पू. बेला बहन व अतिथिविशेष

के पद की शोभा बढ़ाने **भागवत् मर्मज्ञ** गोस्वामी पू. इंदिरा बेटीजी ने महिलाओं में धार्मिक प्रवृत्ति, संस्कार सिंचन का व आत्मिक विकास के लिये अद्भुत मार्गदर्शन दिया। उसके बाद बापा के जीवन सूत्र **'युवकों मेरा हृदय है'** की नींव पर युवक सम्मेलन का आयोजन था। जिसका हेतु आजकल के युवकों को गल्त रास्ते से हटाकर एक नव दिशा की ओर अग्रसर करना था। 8 अप्रैल को दिल्ली से कांग्रेस (आई) के मंत्री माननीय श्री एच.के.एल. भगत साहेब समग्र सत्संग के साथ आत्मीयता व प.पू. काकाजी महाराज के साथ एक अनोखा संबंध होने के कारण इस महोत्सव पर हरिधाम पधारे थे। गुजरात में स्वामिनारायण धर्म द्वारा हो रही युवा जागृति प्रवृत्ति, बहनों के आत्मिक विकास की प्रवृत्ति को देखकर वे खूब प्रभावित हुए....व इस महोत्सव पर सभी स्वरूपों का दर्शन करके स्वयं को धन्य माना। युवा सम्मेलन के बाद श्री एच.के.एल. भगत साहेब अपनी धर्मपत्नी के साथ प.पू. काकाजी के समाधि स्थान 'ब्रह्मज्योति' दर्शन करने गये। वहाँ भी युवा नेता प.पू. साहेब व प.पू. पप्पाजी का आशीर्वाद पाकर अत्यंत खुश हो गये....

9 अप्रैल तथा 10 अप्रैल, 1992 को संत सम्मेलन का आयोजन था। खूब भव्य स्टेज बनाया था.....स्टेज के मध्य में गुरुहरि योगीजी महाराज की हास्यमूर्ति शोभायमान हो रही थी.....आस-पास अपने गुणातीत स्वरूपों प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेब, पू. हरिभाई साहेब, पू. दिनकरभाई (शिकागो) व समग्र भारत में से पधारे संतों, महंतों, मठाधीश, आचार्य संत शिरोमणि अपने-अपने आसन पर विरामान थे। स्टेज की व्यवस्था देखकर अक्षरधाम के दरबार की झाँकी होती थी। मानों हम सारे जगत से अलग एक शीतल शांत छावनी में बैठे हों। मणिनगर स्वामिनारायण गादी के आचार्य प.पू. पुरुषोत्तमप्रियदासजी 40 संतों के संघ के साथ पधारे थे। समढियाळा के पू. निर्मलस्वामिजी के साथ मधुर संबंध होने के कारण वड़ताल मंदिर के पू. कोठारीस्वामी तथा पू. सत्यप्रकाशस्वामी आदि संतों प.पू. आचार्य महाराज का प्रतिनिधित्व करके महोत्सव की शोभा बढ़ाने आये थे। स्टेज पर विराजमान हरिद्वार-सप्त सरोवर पर बनें भारतमाता मंदिर के अधिष्ठाता व संत सम्मेलन के अध्यक्ष प्रातःस्मरणीय सदा वंदनीय प.पू. सत्यमित्रानंदस्वामिजी ने अपनी प्रभावशाली वाणी से सबको मन्त्र-मुग्ध कर दिया और संत सम्मेलन का हेतु समझाया। गुरुहरि योगीजी महाराज का साक्षात् दर्शन किये हुए सोला संस्कृत विद्यापीठ अहमदाबाद के भगवद्वर्य दादाजी कृष्णशंकर शास्त्रीजी संत सम्मेलन के उपाध्यक्ष के रूप में विराजमान थे। हरिधाम को अपना घर मानकर स्टेज पर विराजमान सभी संतों का स्वागत स्वयं कृष्णशंकर शास्त्रीजी खूब भावविभोर होकर कर रहे थे. श्री वामदेवजी महाराज, अयोध्या के महंत श्री पू. नृत्यगोपालजी महाराज, पू. दयाराम बापू, भाणपुर के शंकराचार्य श्री दिव्यानंदतीर्थजी, ऋषिकेश के स्वामी चिन्मयानंदजी, अमदावाद के स्वामी विश्वदेवानंदजी, करमसद के पू. संतरामजी महाराज आदि अनेक संत इस महोत्सव निमित्त दर्शन, सेवा, समागम का अनुपम लाभ देने पधारे थे। इतने सारे संतों का एक साथ दर्शन पाकर हरेक ने स्वयं को परम धन्य व अपने जीवन को सार्थक माना। इस प्रकार खूब आनंद उल्लास से संत सम्मेलन पूर्ण हुआ। हर सभा की समाप्ति पर महोत्सव के प्राणाधार प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी अपनी बलभरी वाणी के रणकार से हरेक का आभार करते—संतों, सेवकों की अद्भुत सेवा, सुरुचि पर दिल की प्रसन्नता बताते, नई प्रेरणा उमंग फूँकते।

10 अप्रैल, 1992 की शाम से योगी शताब्दी महोत्सव की सभा थी। सभी गुणातीत स्वरूपों ने गुरुहरि योगीजी महाराज की महिमा, स्वयं को हुए अनुभव बताकर आशीर्वाद बरसाये। 11 अप्रैल को रामनवमी अर्थात् पूर्ण पुरुषोत्तम श्री सहजानंद महाराज का 212वाँ प्राकट्य दिन.....योगी शताब्दी का मुख्य महोत्सव का दिन.....विशाल जन समुदाय मानों उमड़ पड़ा था। हरेक के चेहरे पर उमंग व उल्लास.....सुन्दर स्टेज के मध्य में गुलाब के फूलों का हार पहने हुए गुरुहरि योगीजी महाराज की हास्यमूर्ति भी समग्र गुणातीत समाज को फलता-फूलता देखकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त कर रही थी....आध्यात्मिक युवा गुणातीत नेता प.पू. साहेब ने देश-विदेश से पधारे संतों, बहनों, युवकों का स्वागत किया.....सभी गुणातीत स्वरूपों ने आशीर्वाद बरसाये.... अत्यधिक आनंद की बात कि इस महामंगलकारी दिन पर भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय नेता माननीय श्री एल.के. अडवानी साहेब अतिथि विशेष के रूप में पधारे थे। मा. अडवानी साहेब ने युवकों के चरित्र निर्माण, व्यसन मुक्ति व नारी उत्थान प्रवृति को देखकर खूब प्रशंसा करी। और गुरुहरि योगीजी महाराज की गगनभेदी जयजयकार करते हुए योगी शताब्दी महोत्सव सभा की पूर्णाहुति हुई और जीवन भर न भूलने वाला दिव्य पाथेय लेकर, गुरुभक्ति अदा करने की नई सीख लेकर सब हरिधाम से रवाना हुए......

योगी शताब्दी महोत्सव के बाद हमें गुरुहरि योगीजी महाराज के अत्यन्त लाडले वारिसदार हमारे प्यारे प्रभु प.पू. काकाजी महाराज के **'अमृत महोत्सव'** जो कि 1993 में आ रहा है, उसकी तैयारी में हर प्रकार से लग पड़ना है....प.पू. काकाजी महाराज ने जो हम सभी के चैतन्य के विकास के लिये अथक् परिश्रम किया.....अपने खून का पानी किया.....हमारी समस्याओं को सुलझाने हेतु दिन रात नहीं देखा......अपनी देह का आराम नहीं देखा.....**बस प्रभु दे देने ही**–अक्षरधाम का सुख, शांति, आनंद देने वे अपने जीवन की आखिरी सांस तक लगे ही रहे.....लगे ही रहे......और आखिर उन्होंने हमारी ही प्रगति के लिये अपनी देह की कुर्बानी दे दी....उन्हीं के अमृत महोत्सव पर अपनी गुरुभक्ति अदा करने, मिलजुल कर 'सुहृद्‌भाव' से– जो उन्हें खूब प्रिय था वह करने दृढ़ संकल्प होकर एक निराली उमंग व उल्लास से सच्चा 'अमृत महोत्सव' मनाने तत्पर होवें.....

❖❖❖❖

12 जून......अनिर्देश से आया हरफनमौला....

प्रभुस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज की जयंती का महामंगलकारी दिन....अक्षरधाम से केवल करुणा करके हम सबके लिये मानव देह धारण करके प्रगट हुई करुणामयी 'माँ' की जयंती का दिन.....

प.पू. काकाजी के बारे में क्या लिखें ?....कलम विराम को पा जाती है...वाणी मौन को पाती है...बुद्धि-दिमाग का चक्र रुक जाता है.....चित्त उनकी हँसती मूर्ति में खोकर उनका स्थूल सान्निध्य पाने आजे भी उन्हें ढूँढने लगता है और दिल तो जैसे अत्यधिक श्रद्धा से झुक जाता है...... बस स्मृति किया ही करें....किया ही करें.....'मुझे ऐसे प्रसाद दिया था....ऐसे धब्बा मारा था...ऐसा मार्मिक सूचन दिया था.....ऐसी करुणा बरसाती निर्मिनेष दृष्टि से देखा था...मुझे ऐसे आशीर्वाद दिये थे...मुझे ऐसे याद करके पत्र लिखा था....'

प.पू. काकाजी के गुण गाने, लिखने खूब आसान है परन्तु उनके जैसा जीवन जीना–ओहो ! तलवार की धार पर चलने जैसा कठिन....प्रभु के पैगम्बर समान ऐसे दिव्य पुरुषों सदा निर्भय, निडर, निःस्वार्थ, महाप्रज्ञ, निष्ठावान, दृढ़ कृतनिश्चयी, असीम सामर्थ्य के धारक, स्वाधीन, क्रांतिकारी और स्वतन्त्र विचरण करने वाले होते हैं। वास्तव में तो वे अपने भक्तों को लाड़ लड़ाने ही आते हैं और फिर हमारे जैसे ही खाते-पीते, सोते, हँसते, रोते, उदास होते–जीवन जीते दिखाई पड़ते हैं–लेकिन भीतर ही भीतर वे तो अक्षरधाम से संचालित एक नवीन व दिव्य समाज की स्थापना के लिये बीज बो रहे होते हैं ।उन बीजों में से अंकुर फूटने, फूल आने और फिर फलों का अस्तित्व आने तक वे अनथक् छुपा परिश्रम करते ही रहते हैं। केवल प्रभु को ही लक्ष्य में रखकर इस धरती के अणु-अणु में प्रभु प्रगटाने का उनका एकमात्र जीवन ध्येय होता है। परन्तु पार्थिव व लौकिक मूल्यों से पर की चेतना में से प्रगट होती उनकी कार्य प्रणालिका को जीव अपने सीमित और बौद्धिक मूल्यों से नाप ही कैसे सकता है न? और इसलिये तो–इन युग विभूतियों के कार्य दर्शन का उनके हमारे बीच में से स्थूल रूप से जाने के बाद, उनके द्वारा खून-पसीने से सींचे बगीचे को देखकर ख्याल आता है कि अरे ! ऐसे बगीचे को तैयार करने वाली वह विभूति ऐसी थी ?

प.पू. काकाजी के जीवन बारे जितना-जितना सोचने की, उन्हें पहचानने की कोशिश करते हैं, उतना ही उनका स्वरूप अत्यधिक भव्य व गहन लगता है कि–अहो हो! काकाजी ऐसे थे ! काकाजी ऐसे थे !

गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज और गुरुहरि योगीजी महाराज धरती पर अपना कार्य करने प.पू. काकाजी जैसी शूरवीर दिव्य विभूति को अक्षरधाम से ही साथ में लाये थे। स्वर्ग से प्रबल वेग से आती गंगा को भगवान शंकर समान कोई झेलने वाला तो चाहिये ही न? वर्ना उस प्रवाह को झेलने का सामर्थ्य धरती में तो कहाँ से था? उस प्रबल-प्रवाह को शिवजी ने अपनी जटा में समा लिया और उसकी एकमात्र धारा इस धरती को पवित्र करने और जीवों के कल्याण के लिये बहने दी....ठीक उसी प्रकार गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज व गुरुहरि योगीजी महाराज की अद्भूत दिव्यता का प्रवाह हमारा क्षुद्र मन-बुद्धि तो कहाँ झेल पाता? हम तो मनुष्यभाव और मायिकभाव की, अपने ही भीतर की गाठों में उलझकर, अपने आदर्शों, मान्यताओं, मूल्यांकनों में फँसकर इन विभूतियों को पहचान ही कहाँ पाते? परन्तु प.पू. काकाजी ने वह गुणातीतज्ञान-गुणातीतभावना स्वयं में Total आत्मसात् करी और उसका सहज, सरल रूप हम सबके लिये निर्दोषबुद्धि धारारूप अर्चिमार्ग से खुल्ला कर दिया। स्वयं ने इसके लिये अनेकों कठिनाइयाँ सहन करी........गालियाँ खाई.....उपेक्षा सही.....और तब भी हमें सुखी करने की चाहना तो जीवन की आखिरी साँस तक रखी....**मुफ्त मौज लुटा देने वाले 'हरफनमौला' निराले शाहीफकीर–'अनिर्देश के शाह सौदागर' ऐसे ही तो होते हैं न?**

प.पू काकाजी का जीवन एक सामान्य मानव की दृष्टि से भी देखें तो भी खूब भव्य व उदात्त दिखाई पड़ता था.....बचपन से ही तेजस्वी विद्यार्थी अनमोल हीरा, जीवंत प्रेमी, देश-परदेश में सफल

व्यापारी, सदा ही निडर, साहसिक युवक, महत्वाकांक्षी तत्त्ववेत्ता, विवेचक भाष्यकार, व्यवहार कुशल पर तब भी–बालक के समान सरल, अतिशय उदार, कुर्बान-फनां होने वाला सेवक, अति समर्थ गुरु का अति समर्थ शिष्य परन्तु अपार भौतिक रिद्धि-सिद्धि होते हुए भी रोम-रोम सर्वस्व समर्पित था–गुरुहरि योगीजी महाराज के चरणों में....गुरु की प्रसन्नता पा लेने में......

बचपन से ही प.पू. काकाजी अत्यंत स्वाभिमानी.... शूरवीर–निडर–'Live life dangerously' साहिसक जीवन जीना–मानों उसका जीवन सूत्र था। एक बार नड़ियाद के पास खरेड़ी गाँव में प.पू. काकाजी अपने मित्रों के साथ क्रिकेट खेलने गए, तब दूसरी टीम का पारसी कैप्टन टॉस हार गया.... उसने दोबारा टॉस उछालने कहा। प.पू. काकाजी अपनी टीम के कैप्टन थे....उन्होंने नियम के मुताबिक दोबारा टोस उछालने सहज ना कही और उसे शांति से समझाने का प्रयत्न किया, परन्तु वह समझने के बजाय झगड़े पर उतर आया....बात जब प्रिंसिपल तक पहुंची, तो उसने कुछ भी कारण जाने-समझे बिना डाँटना शुरू किया। तब प.पू. काकाजी ने स्पष्ट शब्दों में प्रिंसिपल साहब के सामने ही कह दिया कि **सत्य घटना होते हुए भी, स्वाभिमान यदि संभाला न जाये तो बेहतर है कि नेतागिरि छोड़ देनी, खेल छोड़ देना और यदि जरूरत पड़े तो जीवन भी छोड़ देना'।** प्रिंसिपल तो मूक होकर प.पू. काकाजी की निडर वाणी सुनकर उनकी ओर देखते ही रहे....

और....यह सिद्धान्त प.पू. काकाजी ने अपने सम्पूर्ण जीवन में भी रखा...जब उन्होंने देखा कि उनके अपने ही समाज ने अनुभव होते हुए, सच्चाई जानते हुए उनकी उपेक्षा करना शुरु कर दिया है, उनकी कोई गिनती ही नहीं रखकर बल्कि उन्हें नजरअन्दाज कर रहा है, उनकी बातों को जीवन में उतारने के बजाय सुनी-अनसुनी ही नहीं, बल्कि अवहेलना कर रहा है तो आखिर उन्होंने अपनी देह का भी बलिदान कर दिया !! ऐसा नहीं कि उन्हें कोई मान या पुजाने का शौक था कि ये लोग मेरा क्यों नहीं सुनते....उन्हें तो भीतर में एक दर्द था कि अरे ! ये अपने मन के भावों में कहीं यह अनमोल प्राप्ति गंवा न दें....मिट्टी के भाव मिलते सोने को किसी तरह ले लें और अपने जैसा सुख व शक्ति उन्होंने अपने संबंध में आने वालों को देना चाहा पर हम...... !!!

हाँ, तत्त्व से जिन जिन्होनें उन्हें पहचाने, उनके लिये तो वे आज भी हर पल वैसे के वैसे ही प्रगट रहे हैं !! और... प्रत्येक चैतन्य के विकास के लिये पहले से भी अधिक परिश्रम अनेक प्रसंगो द्वारा अनुभव करा रहे हैं...हाँ ! अब उन्हें देखने अन्तर के दिव्य चक्षुओं की जरुरत तो है ही...

वास्तव में प.पू. काकाजी अत्यन्त सामान्य कक्षा पर ही जीये-सो ही हम उनका माहात्म्य जैसा था वैसा समझ नहीं पाये...

अभी थोड़े दिन पहले दिल्ली सत्संग के पुराने जोगी प.भ. पकई साहब की लड़की ने कुछ हरिभक्तों को बताया कि मैं जब भी अपने बच्चों को पढ़ाने बैठती हूँ तो मुझे एकदम प.पू. काकाजी की स्मृति हो उठती है....क्योंकि प.पू. काकाजी जब-जब दिल्ली हमारे घर पर आते थे तो मुझसे मेरे कोर्स की book माँगकर उसमें Imp. Questions पर निशान लगाकर जाते। मैं वही Questions याद करके जाती और आश्चर्य की बात कि प.पू. काकाजी द्वारा mark करे प्रश्न ही exam. आते.... यह सुनकर

लगा कि ओहो ! अक्षरधाम का वह भव्य स्वरूप हरेक के लिये कैसा गरजु बना था? अपना निर्व्याज प्रेम उन्होंने सब पर लुटाया..... और बदले में हम सबने दी उन्हें—उपेक्षा.... नजरअन्दाजी.....

प.पू. काकाजी जैसा आध्यात्मिक जीवन जीकर गये......वह निम्न प्रसंग को निहारने पर पता चलता हैः—

प.पू. काकाजी की अनोखी प्रतिभा को लेकर जब काफी समाज उनकी ओर आकर्षित होने लगा तो संस्था ने दरअसल सिर्फ एक तेजोद्वेष के कारण बहनों के कार्य के विरोध की आड़ लेकर प.पू. काकाजी व उनके संगियों को विमुख कर दिया। प.भ. गुलजारीलाल नन्दाजी उस समय Home Minister थे। Home Minister यानि—Full Powers......उनके हाथ में थी। पू. नन्दाजी ने खूब करीब के साथी मित्र जो सत्संग से भी जुड़े हैं वे जानते थे कि सिर्फ दो तीन व्यक्ति तेजोद्वेष के कारण समाज को गुमराह कर रहे हैं...सो उन्होंने श्री नन्दाजी को सुझाव दिया कि इन दो-तीन जनों को DIR के अन्तर्गत arrest कर लो—सब ठीक हो जायेगा। नन्दाजी ने खूब देर तक सोचकर मानो प.पू. काकाजी को नाप लेने कहा—**दादुभाईजी कहें तो ऐसा कर लेंगे।** प.पू. काकाजी को जब इस बारे में पूछा तो पल भर भी कुछ विचारे बिना एकदम सहज बोले—**हमारी लड़ाई भगवान से है। भगवान के साथ लड़ने के हमारे साधन भी शुद्ध होने चाहिये। शुद्ध साधन यानि भजनरूपी शस्त्र। हमें तो भजन का सहारा लेना है न कि इन गल्त शस्त्रों का** !

प.पू. काकाजी का यह उत्तर सुनकर सभी आश्चर्यचकित रह गये.....हम यदि प.पू. काकाजी की जगह पर होवें तो ऐसा Short Cut मिलने पर तुरन्त उसका आधार लेते....ऐसे विपरीत संजोगों में ऐसी सुविधा मिलने पर उसका फायदा उठा लेते और ऊपर से Justify करने कहते—नन्दाजी को निमित्त बनाकर महाराज ने हमारा काम कर दिया ! .....परन्तु प.पू. काकाजी ने कभी इन सुविधाओं का नाजायज फायदा नहीं उठाया।

ऊपर-ऊपर से देखें तो प.पू. काकाजी का व्यवहार बाह्यवृत्ति से युक्त नजर आता था। परन्तु इनका सारा व्यवहार योगी और योगी के संबंधवालों में ही केन्द्रित था क्योंकि—इससे अतिरिक्त इनको कुछ भी—तनिक भी अधिक नहीं था। और जिन जिन्होंने उनके इस व्यवहार में दिव्यता परखी उन्हें प.पू. काकाजी ने 'दिव्यता' बक्षीश में देकर न्याल कर दिये ! वच. अंत्य. 14 में महाराज ने भी तो आशीर्वाद दिये हैं—

'.....ऐसे बड़े संत बाह्यदृष्टि से बरतते हैं, वह तो कई जीवों को जड़भरत व शुकजी जैसे बना देने ! सो, जीवों पर दया के कारण ही ऐसे बड़े संत व्यावहारिक ढंग से बरतते हैं !!'

अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने उन्होंने अपने अंगत संवकों को कभी नहीं चूसे, बेशक बाहरी जगत से कुछ लेकर वे भक्तों को जरूर मदद रूप हुए...यह थी उस आध्यात्मिक विरल विभूति की अनोखी जीवनपद्धति....

तो आईये, 12 जून को उनकी जयंती के पवित्र अवसर पर बालक बनकर दिल की सच्चाई से उनके ही पदचिन्हों पर चलने का दृढ़ संकल्प करके कृतनिश्चयी बनें.... कि हे काकाजी ! आप ही हमें हर पल, हर सैकण्ड हमारे भीतर प्रगट होकर वर्तने की सूझ-प्रेरणा देते रहना।

❑ ❑ ❑

ब्रह्मप्रवाह

अक्षरधाम की चाबी और सम्पूर्ण सफलता

जीवन में हर एक मानवी कोई न कोई प्रवृत्ति में, कार्य में, आदर्श में सफलता पाना चाहता है और कार्य की धन्यता व पूर्णता से उपलब्ध आनन्द, सुख, शांति और मानव विकास व प्रगति के सर्जनात्मक बलों को गतिमान करने की इच्छा को, आकांक्षा को, वृत्ति को पोसता है। सफलता और सिद्धि के अनन्त प्रकार हैं। तीन गुणों, तीन अवस्थाओं और माया के टोले के इक्यावन स्थानकों से जीवात्मा विविध प्रकार की साधना करके सफलता व सिद्धि का साक्षात्कार करता है। स्थान, भूमिका, तीव्रता, रटना, श्रद्धा और विश्वास के साथ का परिश्रम या पुरुषार्थ के अनुसार ही आनन्द और सुख प्राप्त होता है। तब भी स्वभाव और वासना, प्रकृति और संकल्प विराम जब तक जीते नहीं जाते तब तक सनातन सुख, परम शांति, अलौकिक दृष्टि और आत्मा के साक्षात्कार का अनुभव करके जीवनमुक्त दशा में ही पूर्ण पुरुषोत्तम स्वामिनारायण भगवान का सुख, आनन्द, सामर्थ्य और मूर्ति का अनुपम अपरिमित चैतन्य रस गुणातीत स्थिति में रहकर झेला ही नहीं जा सकता और अनुभव में भी नहीं आता। तो अखंड प्राप्ति तो हो ही कहाँ से? कारण शरीर और उससे भी महादुष्कर महाकारण की तूर्यावस्था देवों को भी विक्षेप में डूबो देती है और अवतारों को भी बाधारूप होती है। उन्हें जब तक जीत नहीं लेते व साथ-साथ सत्संग करके आत्मा के साक्षात्कार की सम्पूर्ण सफलता का अनुभव करके ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म पुरुषोत्तम की सेवा में दासभाव से अखंड आनन्द, परम सुख व शांति प्राप्त करके मुक्तदशा की धन्यता जब तक प्राप्त नहीं होती, तब तक भले ही सफलता की, प्रकाश की, दर्शन की, ज्ञान की, भक्ति की, सेवा से बड़ेपन की स्थिति को पहुँचे हो, तब भी खतरे हैं ही और सगुण निर्गुण भाव के भेद से भी परे निरपेक्ष निष्कामभाव से भी भरपूर निष्कपट रूप से वर्त महाराज के चरणों में निमग्न रह कर, सत्संग-सेवा-भक्ति से, निडरता से और सम्पूर्ण सफलता-परिपूर्णता की प्रतीति सहित की भावना से मुक्तभाव अनुभव नहीं कर पाते, न ही भोग पाते हैं। इस हेतु स्वयं का स्वरूप अक्षररूप मानकर मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानन्दस्वामी के साधर्म्य को पाकर, मनन द्वारा संग करके, महाराज की सेवा-भक्ति दास बनकर करने की अक्षरधाम की चाबी—केवल महाराज, स्वामिजी या तो देह रहते हुए ही एकांतिक भाव से उनके साधर्म्य का साक्षात्कार पाये किसी परम भागवत संत द्वारा ही प्राप्त करी जा सकता है व करोड़ों जन्म की कसर टलती है। धाम की चाबी हाथ में आने के बाद—सत्संग करते-करते संत के चरणों में रहकर—धाम की विभूतिमूर्ति के सामर्थ्य, सत्ता, गुण, ऐश्वर्य, सुख, सर्वोच्च रीति से गुणातीत स्थिति में अपार अमृत के सागर में—चिदाकाश की ही राशि में किस प्रकार अखंडित अविरत रूप से प्राप्त होती जायें वही इस जीवन का सच्चा पुरुषार्थ है—वही ध्येय है व साधना द्वारा परमपद की सर्वोत्कृष्ट मुक्तभाव की स्थिति और सम्पूर्ण सफलता है। उसके पश्चात् कुछ पाना, अनुभव करना, भोगना या प्राप्त करना रहता ही नहीं। ऐसी प्राप्ति—इस लोक की व परलोक की—संत द्वारा ही संभव है। मनन करना—वच.ग.प्र. 54, मध्य. 54, वरताल 5,11, मध्य 30, 45,62।

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के पुरुषार्थ अविरत रूप से अनादि काल से चल ही रहे हैं। आत्यंतिक मुक्ति केवल श्रीजी ने आसान बनाई है। उसी हेतु यह जीवन है। प.पू. योगीजी महाराज तथा पू. मोटास्वामी, पू. अक्षरपुरुषोत्तमदासस्वामी जैसे परम भागवत संतों और महाराज के ही साक्षात् स्वरूपों द्वारा वच. लोया 12 के अनुसार अति उत्तम निर्विकल्प निश्चय सिद्ध करके गुणातीत स्थिति प्राप्त करनी है। देह रहते हुए ही अक्षरधाम की चाबी लगाकर, महाराज की मूर्ति का परम सुख, आनन्द जो वच. मध्य 66, अमदाबाद 67 के अनुसार आता है, वह वच. मध्य 29-38 की रीति से अनुभव करके अखंड प्राप्त कर लेना है। इस हेतु जो रीति इस लोक मे अख्तियार होती है, वैसे ही अक्लमंद पुरुष को—मुमुक्षु को अक्षरधाम की चाबी प्राप्त करने का प्रयास करना है।

एकलव्य भील का लड़का था और द्रोणाचार्य ने अर्जुन को वचन दे दिया था—सो अन्य कोई समर्थ तीरंदाज न बने यूँ करके धनुर्विद्या सिखाने की अरुचि बताई। फिर भी एकलव्य माता के आशीर्वाद लेकर, केवल गुरु की मूर्तिरूपी उपासना, आज्ञा और भक्ति से विद्या प्राप्त कर सका और गुरु को भी शर्मिन्दा कर दिया। बलि राजा ने भी सर्वस्व का—स्वार्पण भगवान के लिये ही किया, तब भगवान साक्षात् वश में हो गये और आदर्श की सम्पूर्ण सफलता-प्राप्ति-ध्येयसिद्धि व साधना का अंत और कृतकृत्यता अनुभव की। शास्त्रों में वह मुक्तकंठ से गाई जाती है। यदि एकलव्य की सिद्धि गिनों तो—सफलता की चाबी—अपरिमित श्रद्धा, अस्खलित परिश्रम और अखंड तमन्ना-तीव्रता—सर्वोपरि उपासना में समाई हुई है। ऐसे प्रयत्न के लिये परम भागवत साक्षात् गुरुहरिश्री हमें मिले हुए हैं। अक्षरधाम की चाबी—सर्व वचनामृतों का सार रहस्य—एक ही वाक्य में आ जाता है कि **'यथार्थ स्वरूपनिष्ठा समझकर आज्ञा पालो।'** सो गुरुचरण में रहकर जितनी आज्ञा पाली जायेगी और निष्कपट रूप से वच. लोया 5 के मुताबिक महाराज का व प्रगट संत प्रत्यक्ष पू. योगीजी महाराज एवं संतों का स्वरूप निर्दोष समझकर उनकी मर्जी के अनुसार सम्पूर्ण विश्वास से—वह जो कहे वह करके आनन्द से वर्ता जायेगा उतनी साधना की सिद्धि—परमपद की प्राप्ति और स्वामिजी का सुख प्राप्त होगा ही। यह अक्षरधाम की चाबी—'गुरुमुखी बने'—सिवा, धाम के दरवाजे पर महामाया तथा महाकारणरूपी तुर्यावस्था बीच में टाँग अड़ाकर लूट लेकर स्थिति में से गिरा देने को तैयार ही रहती है। इसलिए मनमुखी न बनकर, साक्षात्कार की स्थिति को पाये सत्पुरुष द्वारा ही सम्पूर्ण सफलता प्रत्येक सत्संगी देह रहते हुए ही अनुभव करे, भोगे और प्राप्त करे। प.पू. शास्त्रीजी महाराज ने आत्यंतिक मुक्ति का मार्ग सभी के लिये अक्षरपुरुषोत्तम की सच्ची उपासना मूर्तिमान बनाकर अतिशय सरल बना दिया है। गुणातीत ज्ञान सबीज है—सो उसकी अनादि चिदाकाश की साकार मूर्ति जो प्रत्यक्ष है, उसमें 'मैं' और 'मेरा' भूलकर, खोकर, शरण पकड़कर, चाबी लगाकर, स्वधर्मयुक्त वर्तकर, समग्र सत्संग में अखंड दिव्यता की दृढ़ता करनी—यही हमारे सभी के जीवन का आदर्श,ध्येय और साधना होनी चाहिये। गुरुहरि हम पर कृपादृष्टि रखकर परम पद के अधिकारी बनावें—यही अभ्यर्थना।

फूलों की खुशबू वायु की लहरों के साथ रास्ते से जाते हुए हर किसी को—प्राणीमात्र को मुग्ध बनाकर स्वयं का अनुभव कराती है, वैसे ही गुणातीत बाग के संतचरणों में ही विकसित हुए और साधना

प्राप्त करते अपने सत्संग के महाफूल उनके जीवन की कृतकृत्यता–आत्मा परमात्मा का साक्षात्कार करके, इसी जीवन में मुक्तभाव को पाकर दूसरों का–अनन्त जीवों का कल्याण का–मंगल का, विकास का–परिपूर्ण सफलता का मार्ग ऐसा ही निष्कंटक रखें और सरल-सादा जीवन जीकर, दासभाव से ही सर्वोपरि उपासना दृढ़ करा कर, सेवा व भक्ति के रूप में उनकी सुगंध का परमानन्द सभी के लिये दृष्टिगोचर बनावें–यही स्वामिजी को नम्र प्रार्थना है।

❑ ❑ ❑

वचनसुधा :—

❑ आप सब अपने पाप और कष्ट, दिक्कतें और गल्तियाँ मुझे दे दें। आप इन दुःखों से मुक्त हो जाईये और सनातन आनन्द में जुड़ जाईये। प्रथमतः परमात्मा का स्मरण कीजिये और बाद में अपना कार्य। मैं तो कहता हूँ कि आप केवल ग्यारह बार स्वामिनारायण मन्त्र का स्मरण कीजिये, फिर कार्य कीजिए। फिर देखिये कि क्या चमत्कार होता है। 12-6-'78

❑ आप किसी भी देव को क्यों न मानते हों, आप उन पर अत्यन्त श्रद्धा रखिये। फिर वह माताजी हो या महादेव, विष्णु हो या कृष्ण या अन्य देवी-देवता। आप उन्हीं के बन जाईये। कष्ट इस बात का है कि परमात्मा आपकी, आपके जीवन की प्राथमिकता–First preference नहीं है। धन, पत्नी, पुत्र, सत्ता आदि ही आपकी प्राथमिकताएं हैं। परमात्मा का नम्बर आता भी है तो चौथा या पाँचवाँ। मुझे तो इतना ही कहना है कि परमात्मा को अपने जीवन में प्रथम स्थान दीजिये। 3-2-'80

–प.पू. काकाजी महाराज

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	18.5.92	सोमवार	अशोकविहार मंदिर में आज से एक माह के 'जपयज्ञ' का प्रारम्भ रोज सुबह 6.45 से 8.00
2.	दि.	28.5.92	गुरुवार	एकादशी, व्रत
3.	दि.	29.5.92	शुक्रवार	गुरुहरि योगीजी महाराज का प्राकट्य दिन
4.	दि.	10.6.92	बुधवार	भगवान स्वामिनारायण का स्वधामगमन दिन
5.	दि.	11.6.92	गुरुवार	एकादशी, व्रत
6.	दि.	12.6.92	शुक्रवार	ब्र.स्व. काकाजी महाराज की जन्मजयंती
7.	दि.	14.6.92	रविवार	अशोकविहार मंदिर में शाम को प.पू. काकाजी महाराज की जयंती मनायेंगे

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashok vihar-III, Swaminarayan Marg, Kakaji Lane,
Delhi-110 052. (India) Tel. : 7229327, 7249327
Printed at **Kamal Printers,** IX/5866, Gandhi Nagar, Delhi-110 031